आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 12/06/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2023

दुष्यंत कुमार का रचना वैशिष्ठ्य : एक अवलोकन

डॉ. नागरत्ना .एन. राव
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलौर

डॉ. नागरत्ना एन राव, **दुष्यंत कुमार का रचना वैशिष्ठ्य : एक अवलोकन** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (336-340)

भारत के प्रथम हिंदी ग़ज़लकार के रूप में प्रख्यात कवि और कथाकार दुष्यंत कुमार जनता के कवि हैं। जनता की पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता के कारण उनका स्वर सड़क से संसद तक गूंजता है उनके काव्य का मूल स्वर "मानवता "है तभी उनके काव्य में जनता की वेदना ,व्याकुलता सहज प्रकट होती है। उनके गीत का एक स्वर दृष्टव्य है - "एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों ,

इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

दु:ख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,

और कुछ हो या न हो , छाती तो है।

कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं ,

गाते -गाते लोग चिल्लाने लगे हैं। "१

दुष्यंत कुमार की रचनाओं में जो आग है वह समाज की विद्रूपताओं की चिंगारी है। वे स्वयं कहते हैं -" मेरे पास कविताओं के मुखौटे नहीं , अंतर्राष्ट्रीय मुद्राएं नहीं और अजनबी शब्दों का लिबास नहीं है। मैं एक साधारण आदमी हूँ। "२

दुष्यंत कुमार की रचनाएँ -एक परिचय

दुष्यंत कुमार की जन्मभूमि बिजनौर है ,जो साहित्य जगत में खड़ी बोली की जन्म भूमि के रूप में मान्य है। इन्होने प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी ,इतिहास और दर्शनशास्त्र में बी ए किया और फिर एम ए भी किया। महाविद्यालयीय जीवन में ही इन्हे साहित्य जगत से लगाव रहा। प्राचीन कवियों में वे सूर ,तुलसी ,छायावादी काव्य परंपरा के कवियों में निराला का इन पर विशेष प्रभाव रहा। इनका प्रिय कवि बच्चन ,राष्ट्रकवि दिनकर हैं। इस प्रकार प्रारम्भ से ही वे लेखन कार्य में रुचि रखने लगे। इनकी पहली रचना "पहेली पहचान " प्रकाशित हुई जिसे मूल रूप में इन्होने "परदेशी "नाम से लिखा था। इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं -

सूर्य का स्वागत ,आवाज़ों के घेरे , जलते हुए वन का वसंत ,साये में धुप और कुछ कवितायें िनी डायरी में लिखी मिली। इनका एक नाटक है -"एक कंठ विषपायी। "

"सूर्य का स्वागत " में मानव जीवन सम्बन्धी अनेक विषयों पर कवितायेँ हैं। वे मानव के बिगड़ते रिश्तों तथा उसके जीवन में व्याप्त ईर्ष्या और घृणा से परेशान हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानव की प्रवृत्ति का आंकलन किया है। वे मानव की अवसरवादिता ,स्वार्थपरता के कारण आ रहे मानव जीवन की विकृतियों से व्याकुल हैं। "आवाज़ों के घेरे " में विषय वैविध्य है जिसमें वे अपनी आस्था और जीजिविषा को व्यापक रूप से वर्णित किया है। वे मध्यवर्गीय जीवन का व्यापक चित्रण करते हैं। इनकी कुछ कविताओं में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव है। "जलते हुए वन का वसंत " आम आदमी की वेदना ,बेचैनी ,रिश्तों का खोखलापन तथा कुत्सित सामाजिक ,राजनैतिक एवं नैतिक मूल्यों का चित्रण करते हैं। "साये में धूप ",दुष्यंत कुमार का अंतिम काव्य -संग्रह है ,जिससे उन्हें सर्वाधिक लोकप्रियता मिली। इसी रचना से दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल को एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया। "एक कंठ विषपायी "गीतिनाट्य है जो शिव पुराण के प्राचीन कथानक सती - दाह के धरातल पर आधुनिक भावबोध को प्रस्तुत करता है।

रचना वैशिष्ठ्य -

साहित्य मनीषी और मानवता के कायल दुष्यंत कुमार एक स्वतंत्र व्यक्तित्व -कृतित्व लेकर हिंदी साहित्य में प्रवेश करते हैं। बहुत ही काम अवधि में अपार लोकप्रियता भी हासिल करते हैं। इन्होने नाटक ,काव्य नाटक ,रेडियो नाटक ,उपन्यास ,संस्मरण ,साहित्य समीक्षा आदि लिखा है। लेकिन वे कवि के रूप में अधिक पहचाने जाते हैं। काल की दृष्टि से वे नयी कविता के कवि हैं। इनकी कविताओं का विषय अत्यंत व्यापकता और गंभीरता लिए हुए है। काव्य को उन्होंने सतही धरातल से ऊपर उठाया। इनके काव्य में समसामयिक जीवन से गृहीत विषय तो हैं जिसमें सामजिक व्यवस्था की अव्यवस्था का चित्रण है। कहीं -कहीं इन्होने पौराणिक कथ्य का सहारा लेकर आधुनिक युगबोध की अभिव्यक्ति की है। इनका काव्य कोरी भावुकता से दूर यथार्थ को लिए हुए है। उनकी रचनाओं की विशिष्टता इस प्रकार है -

आम आदमी का दर्द –

दुष्यंत कुमार की रचनाओं के केंद्र में आम आदमी का दर्द है जो अभाव ,दुःख ,बेचैनी ,अनिश्चितता में जीने को मजबूर है। काव्य में व्यक्त इनका दर्द प्रेमजनित न होकर सामाजिक समस्याओं से जन्मा है। "साये में धूप " का प्रत्येक ग़ज़ल इस आम आदमी के दर्द को महसूस करता है -

" रोज़ जब बाहर का गज़र होता है /

यातनाओं के अँधेरे में सफर होता है। "

"सूर्य का स्वागत " रचना में दुष्यंत कुमार ने आम आदमी की पीड़ा ,वेदना के बीच उसके दर्द को व्यापकता से वर्णित किया है। आज़ादी के बाद भारत में मूल्यों का विघटन होने लगा। बढ़ती मूल्यहीनता ने मानव को उसकी उसकी नैतिकता को विनष्ट कर दिया। कवि ने मानव की इस दुःस्थिति को पहचाना और उसकी

अभिव्यक्ति दी। आज मानव जिस मूल्य संकट से गुजर रहा है वह नगरों और ग्रामों में समान है। "जलते हुए वन का वसंत " कविता में यह भाव देखने को मिलता है। उन्होंने मानव दुःख को उसके यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति दी वे छायावादी कवयित्री की तरह मानते हैं कि दुःख है तो संघर्ष है और संघर्ष ही जीवन है। इस प्रकार दुःख के बिना जीवन निष्फल है। उन्होंने आम आदमी के दर्द को महसूस किया और उसे अभिव्यक्ति दी ,उसे छिपाया नहीं। जब तक हम अपने दर्द को जानेंगे -पहचानेंगे नहीं तब तक उसका निवारण भी नहीं कर सकेंगे। उनका मानना है कि दर्द को दूर करने के लिए उसकी पहचान ज़रूरी है। उनका दर्द व्यक्ति सापेक्ष न होकर समाज सापेक्ष है। वे एक ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं जहाँ दर्द तो है पर उसको दूर करने का जज़्बा भी हो। लेकिन सच्चाई यह है कि दर्द में डूबा व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों को विस्मृत कर बैठता है। दुष्यंत कुमार यही याद दिलाना चाहते हैं। वे मानव को एक स्वस्थ समाज की और अग्रसर करते हैं।

आस्था और जीजिविषा का स्वर

एक सच्चा रचनाकार वही है जो समाज में आस्था जगाये और सही दिशा दे। दुष्यंत कुमार की कविताओं में आस्था और जीजिविषा का स्वर मुखरित है। वे आदमी के दर्द को महत्त्व तो देते है लेकिन उसी में डूबे नहीं रहते। उन्होंने दर्द की सीमाओं को पार कर आस्था और जीजिविषा भी दी। "सूर्य का स्वागत" काव्य संग्रह में उनके इसी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। वे मानव को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर ले जाते हैं।

"ईश्वर की शपथ इस अँधेरे में

उसी सूरज के दर्शन के लिए

जी रहा हूँ मैं कल से अब तक। "३

वे भटके हुए व्यक्ति को रास्ता दिखाते हैं। जो हताश और निराश हैं उन्हें अज्ञानता से ज्ञान की रौशनी में लाते हैं। उनके स्वर में विश्वास है ,वे कहते हैं - "यों उतावले मत हो ,रचेगा जरूर

सूरज है , तुम ने बनाया है। " ४

रचनाकार अपनी एक भिन्न सृष्टि रचता है और एक सच्चा रचनाकार वही है जो समाज को अभय दान दे उसे आशावादी बनाये ताकि एक बार मिले इस मानव जीवन को वह व्यर्थ विचारों से बर्बाद न करे बल्कि सुकर्म से उसे सार्थक करे। यह तभी संभव है जब उस में आस्था और विश्वास हो।

प्रजातंत्र के हिमायती -

दुष्यंत कुमार जनता के हिमायती हैं। वे समाज की त्रासदी से पीड़ित हैं तभी वे उनकी सुख -समृद्धि की कामना करते हैं। उन्हें इस बात की ख़ुशी है कि भारत प्रजातंत्र है लेकिन यह प्रजातंत्र अपने लक्ष्य से आज भटक गया है। वे समकालीन राजनीती में व्याप्त अनीति एवं भ्रष्टाचार से आतंकित हैं। भारतीय राजनीति की विभिन्न विसंगतियों और विडम्बनाओं को "साये में धूप " में इस प्रकार व्यक्त करते हैं -

"कहाँ तो तय था चिराग हरेक घर के लिए

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए। " ५

" जलाते हुए वन का वसंत " काव्य संग्रह में देश की राजनीति का यथार्थ सामने लाते हैं। उनके अनुसार प्रजातंत्र का पर्याय जनता की सेवा है ,जो आज नदारद है। राजनेता को देश की नहीं अपनी कुर्सी की चिंता है। चुनाव जीतने से पहले सभी राजनेता बड़े -बड़े वादे करते हैं पर बाद में भूल जाते हैं। इस कविता में वे इसी सच्चाई का बयां करते हैं-' जनता की सेवा करने के भूखे सारे दल

भेड़िये से टूटते हैं। " ६

नेता तो राष्ट्र निर्माता होता है पर यहाँ वह राष्ट्र को संकट में डाल रहा है। इसी कारण वे राष्ट्र निर्माता नेता पर व्यंग्य करते हैं। प्रजातंत्र में भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या है जिसका कोई निवारण नहीं। "एक कंठ विषपायी " में इसी राजनीतिक यथार्थ का चित्रण करते हैं –

"ऐसे लोग अहिंसक कहाते हैं,

मांस नहीं खाते हैं ,मुद्रा खाते हैं। " ७

इस काव्य में सर्वहित नामक पात्र जनता का प्रतिनिधि बनकर जनतंत्र में व्यक्ति की भूमिका निभाने में भलीभांति सफल होता है। जनसामान्य की स्थिति का वर्णन करते हुए वे कहते हैं - "शायद मैं राजा हूँ ,शायद मैं शासन का प्रतिनिधि हूँ।

जो मैं इस राज्य की प्रजा हूँ ,शायद मैं कुछ भी नहीं हूँ और सब कुछ हूँ। " ८

इस प्रकार दुष्यंत कुमार के काव्य का विषय व्यापक और गंभीर है। जीवन के प्रत्येक पहलू का वे बारीकी और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति देते हैं। उनका काव्य आज़ादी के बाद के मोहभंग और प्रजातंत्र की विसंगतियों का ताना -बाना है। वे जीवन की सहजता में विश्वास करते हैं। वे अपनी अनुभूतियों को ईमानदारी से प्रस्तुत करते हैं। उनका मन प्रजा के दुखों से सदा बेचैन रहा। उनका एक गीत दृष्टव्य है -

" चाहे कितना कसकर बांधों यह तूफ़ान न बंदी होगा

उठा आ रहा दूर एशिया की घाटी से विप्लव का स्वर।

सोने -चांदी की दीवारें हो जाएंगी खँडहर -खँडहर ,

करते हो उपहास हमारा किस बूते पर किस बल पर

चमकीले सिक्कों के बंधन में ईमान न बंदी होगा। " ९

उनकी रचनाओं के स्वर में स्वीकार और अस्वीकार दोनों है जिसमें बेचैनी ,नाराज़गी ,असुरक्षा ,प्रतिरोध सब है। वे जनपक्षधर हैं और जनजागृति के लिए आवाज़ उठाते हैं। उनके ग़ज़लों से उन्हें लोकप्रियता प्राप्त हुई। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है उसे खारिज कर एक नए विकल्प की तलाश करते हैं ताकि एक आम आदमी संतुष्ट जीवन जी सके।

....

१) हरिचरण शर्मा -आधुनिक कवि ,पृ १४७

२) दुष्यंत कुमार - साये में धूप , पृ ४६

३) दुष्यंत कुमार -सूर्य का स्वागत , पृ २४

४) दुष्यंत कुमार -सूर्य का स्वागत ,पृ ३४

५) दुष्यंत कुमार -साये में धूप ,पृ ३५

६) दुष्यंत कुमार -जलते हुए वन का वसंत ,पृ २३

७) दुष्यंत कुमार - एक कंठ विषपायी ,पृ ३७

८) दुष्यंत कुमार -एक कंठ विषपायी ,पृ ५३

९) डॉ सर्वदानंद द्विवेदी -हिंदी का साहित्यिक -सांस्कृतिक परिदृश्य ,पृ ६८

****